भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 22 अंक : 1 | मंगलवार, 26.1.99 | वार्षिक चंदा : 50.00

3 फरवरी-स्वरूपानुभूति दिन

साधक की तीव्र अभीप्सा और असीम श्रद्धा जब प्रभु की सार्वभौम सत्ता के अस्तित्व में एकत्व को पाती है, तब उसे प्रभु मिलन के तरह-तरह के अनुभव या साक्षात्कार होते रहते हैं। प्रगट प्रभु की असीम कृपा और प्रेम का यह फल है। कोई भी साधक सच्चे प्रत्यक्ष सद्गुरु की ऐसी कृपासमाधि का पात्र बनने पर जीतेजी ही परम चेतना की अनुभूति प्राप्त करता है। फलस्वरूप मुख्य रूप से यूं चार प्रकार के साक्षात्कार होते ख्याल पड़ते हैं। आध्यात्मिक विकास में उसे मिस्टीकल एक्सपीरियन्सिस कहते हैं। कई उसे ओकल्ट एक्सीपिरियन्सिस भी कहते हैं। वास्तव में सत्यशोधकों की सत्यनिष्ठा पर हुए ऐसे अनुभवों का वर्णन मूल में एक सरीखा ही होता है। जैसे कि-

1. प्रकाश के उर्ध्वगमन के मानसिक और आध्यात्मिक अनुभव,
2. सविकल्प समाधि के - राजयोग के - कुंडलिनी की जाग्रतता के अष्टांगयोग के अनुभव और अनुभूतियाँ,
3. निर्विकल्प समाधि के अनुभव और अनुभूतियाँ - जिसे अंग्रेजी में अट्रीब्यूटलेस प्योर कोन्शियसनेस भी कहते हैं।

श्री रामकृष्ण परमहंस, श्री रमण महर्षि, स्वामी रामदास जैसे महान संतों की तथा तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर और स्वामिनारायण सम्प्रदाय में गोपालानंदस्वामी, स्वरूपानंदस्वामी वगैरह को ऐसी आध्यात्मिक अनुभूतियाँ हुई हैं-जिसका इतिहास सभी जानते हैं। उनके द्वारा किए शक्तिपात के रूप में या तो उनके प्रसंग व समागम से स्वामी विवेकानंद और स्वामी रामतीर्थ जैसों को प्रेमावेश में या चेतना की संपूर्ण जागृति एवं दिव्य सभानता के रूप में हुई ऐसी अनुभूतियाँ सभी के ख्याल में हैं। जिसकी जैसी साधना और जैसे समर्थ सद्गुरु का संपर्क व सत्संग, वैसी उसके चैतन्य के विकास की आध्यात्मिक भूमिका-अवस्था रहती है। इसे कई ब्राह्मीस्थिति भी गिनाते हैं। ऐसे आध्यात्मयोगी सिद्धदशा को प्राप्त करते हैं और सिद्धयोगी भी कहलाते हैं। यह कोई चमत्कार नहीं, बल्कि साधक की साधना के परिणामस्वरूप प्रभुकृपा से हुआ वासना का क्षय और प्रकृति के रूपांतर की प्रक्रिया है। अलग-अलग व्यक्तित्वों में से भिन्न-भिन्न कोषों में से प्रसार होकर साधक का जीवन विज्ञानमय कोष में से आनंदमय कोष में प्रवेश करता है और वेदांत के महावाक्य 'अहं ब्रह्मास्मि-तत्त्वमसि-नेहनानास्ति किंचन-अयमात्मा ब्रह्म' वगैरह की अनुभूतिरूप से उसे आत्मप्रतीति होने के कारण परम चेतना का यह साक्षात्कार दिखाई देता है। इसे निर्विकल्प समाधि कहा जाता है। यहाँ कोई संकल्प-विकल्प को स्थान नहीं, बल्कि अनूभूतिरूप में ब्रह्म और परब्रह्म का ज्ञान होता है। 'वासुदेवः सर्वमिति' की भावना या अखंड स्थितप्रज्ञता उनके जीवन में पल-पल प्रकाशित होकर प्रदर्शित होती रहती है। फलस्वरूप सिद्धदशा के साथ अनेक रीद्धि-सिद्धियाँ और शक्तियाँ उनमें प्रगटती हैं। ऐसे चार प्रकार के सिद्धसंत उनके प्रसंग में आने वाले को भी आत्मदर्शन या ब्रह्मदर्शन करवा सकते

हैं। वैदिक परम्परा से गुरु-शिष्य का ऐसा संबंध अद्वैत एवं विशिष्टताद्वैत रूप से - यूनिटी इन डाईवरसिटी एन्ड डाईवरसिटी इन यूनिटी और परम चेतना की परात्परता के रूप में सनातन आध्यात्मिक अनुभूति के भाव में परिवर्तित होता है। जीवनमुक्त दशा और विदेहीमुक्त दशा इस प्रकार प्राप्त होती है। इसे नित्यमुक्तों की अवस्था भी कहते हैं। एकांतिक भक्तों के लिए संतमार्ग द्रारा यह सरल बनती है।

तपस्या से हुए साक्षात्कारों में सच्चे सद्गुरु के प्रसंग के अभाव से कई सिद्धों और योगियों को विघ्न भी पड़ता है रिद्धि-सिद्धि या ऐश्वर्य-प्रताप में फंसकर प्रतिष्ठाहीन होते हैं। आध्यात्मिक विकास में पीछे हठ तो नहीं, लेकिन उनकी प्रगति रूक जाती है। जबकि अंतिम प्रकार का साक्षात्कार कहो, उसमें भगवान एवं ब्रह्मस्वरूप संत की कृपा और प्रसंग से कोई अड़चन पड़ती नहीं कोई विकारी तत्व रहता नहीं और वासना का संपूर्ण क्षय होकर, मूल प्रकृति का दिव्यता में रूपांतर होकर चेतना ब्रह्म-दर्शनरूप से-ब्रह्मस्वरूप रूप से परम मंगलकारी अवस्था प्राप्त करती है। चौथी प्रकार का यह साक्षात्कार ज्ञानसमाधि के रूप में या असली ब्राह्मीस्थिति के रूप में-एक पूर्ण योगीरूप में या परम एकांतिक के रूप में शास्त्रकारों ने गीता उपनिषद् में और महाप्रभु स्वामिनारायण ने वचनामृत में स्पष्ट बताया है। ऐसी परम मंगलकारी अवस्था प्राप्त करके जीतेजी भगवान का सुख, शांति और आनंद प्राप्त करना और अन्य को भी देना-यही जीवन का अंतिम ध्येय है....और यही सच्ची सहज समाधि या ज्ञानसमाधि कही जाती है।

इसके सिवा दूसरे सभी आध्यात्मिक अनुभव कभी ट्रान्स अवस्था में मूर्छारूप में कई साधकों को होते रहते हैं। वे भ्रामिक और सपने समान ही होते हैं। कई इन्हें चमत्काररूप में मिरेकल्स में रूप में भी गिनते हैं। ये केवल स्थूल या सूक्ष्म या मानसिक भूमिका के मनोवैज्ञानिक अनुभव भी हो सकते हैं। इन्हें सच्ची आध्यात्मिकता के साथ खास लेना-देना नहीं है। शक्ति के उपासकों को भी रिद्धि-सिद्धि का यूं कई प्रकार से अनुभव होता है, लेकिन वह सच्ची दिशा में आध्यात्मिक नहीं होते। मैली विद्या या जिसे पौराणिक युग में जादूगर का खेल जैसे बतायें हैं, वैसे के ये अनुभव होते हैं। मन, प्राण, इंद्रियां या देह की कोई विशिष्ट प्रकार की एकाग्रता से हुए उन तत्त्वों के आभासों को और मानसिक ख्यालों को वे आध्यात्मिक अनुभव के रूप में गिनते हैं, लेकिन वहाँ कोई न कोई सूक्ष्म वासना या प्रकृति के भाव या मन के आभास बीजरूप में तो रहे हुए होते ही है-जिसके कारण उनसे शुद्ध चैतन्य ब्रह्मभाव में वर्ता नहीं जा सकता। सो, सम्यक् ब्रह्मदर्शन की अपेक्षा ये बिल्कुल अधूरे व मर्यादित होने के कारण जगत में और जीवन में योगी अखंडित पूर्णता एवं कल्याण रीति को समग्रतया प्रगट नहीं कर सकते।

जबकि सच्चे संत के प्रसंग से प्राप्त हुए आत्मदर्शन के और ब्रह्मदर्शन के अनुभव व अनुभूतियाँ प्रकृति के मूलभूत रूपांतर के साथ जुड़े हैं और वह रूपांतर दिव्यजीवन के रूप में सभी को स्पष्ट और निश्चयात्मक लगते हैं। सच्चे संत इसके प्रतीक हैं। ऐसे जीवनमुक्त भगवान के दास होकर भी प्रकृति के वे स्वामी हैं। जगत के वे मंत्रदाता हैं और अन्य जीवनमुक्तों के वे सहभागी समान भागीदार हैं। अपने यहां महाप्रभु स्वामिनारायण ने हमें ऐसे ज्योर्तिधर प्रकटाकर ऐसी संत प्रणालिका का अस्खलित प्रवाह जारी रखा है। पांचवीं पीढ़ी पर ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ऐसी विरल स्वरूपानुभूति करवाने वाले और दिव्यज्ञान की अभिव्यक्ति करने वाले अद्वितीय और अप्रतिम गुणातीतस्वरूप थे, जिन्होंने अत्यंत कृपा करके ऐसी परम मंगलकारी अवस्था की प्राप्ति के लिए ब्राह्मीशक्ति का खुल्ला अवतरण प.पू. महंतस्वामी तथा प.पू. प्रमुखस्वामी जैसे अनुभूति वाले पुरुषों द्वारा कायम रखा है....और वही उनकी करुणा और दिव्यप्रेम का बख्शिशरूप में वारसा है।

प.पू. योगीजी महाराज के वचन से संतों और जीवनमुक्तों के लिए ही नहीं बल्कि प्रगट के संबंध वाले श्री नंदाजी के लिए 1952 में घमघमाहट चलते धंधे को बाजू में रखकर-ऑफिस छोड़कर हजारों रूपयों का खर्चा करके-अपने परिवार वालों को भी उस सेवा में लगाकर प.पू. काकाजी नंदाजी के चुनाव विजय में निमित्त बने। सेवा के फलस्वरूप 1952 की वह महामंगलकारी 3 फरवरी को पू.बापा ने गोंडल अक्षरमंदिर में प.पू. काकाजी को लगातार 72 घंटे तक परम चेतना की एक अनुभूति कराई... ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने उनकी चेतना को स्थूल शरीर से अलग करके गोलोक बैकुंठ-बद्रिकाश्रम-श्वेतद्वीप जैसी चैतन्य भूमिकाओं का तत्त्वदर्शन करवा कर, विविध अनुभूतियों में से प्रसार करके ब्रह्म-परब्रह्म के दिव्य स्वरूपों की अपरोक्षनुभूति करवा कर, अक्षरधाम की परात्परता का

स्पष्ट ख्याल दिया और गुणातीत भावना अमर है व अखंडित रही है उसकी पक्की प्रतीति करवा कर ऐसे चैतन्य स्वरूपों को जैसे हैं वैसे पहचानना उसे ही भक्तपन एकांतिकभाव बताया।

इसकी सम्यक् प्रतीति उन्हें भावसमाधि के रूप स्वरूपानुभूति में निश्चयात्मक अनुभव रूप से सिद्ध हुई। फलस्वरूप उनकी मृत्यु और महामृत्यु होने पर महाकाल से पर की अखंड प्रकाशमय-सच्चिदानंदमय ब्रह्म की अनंनता में उनका प्रवेश हुआ और चेतना का सम्पूर्ण रूपांतर हुआ। उनके इंद्रियों-अंतःकरण का प्रवाह उसी पल से ही अस्खलित रूप से प्रभुमय वर्तता हुआ.....गुरुहरि योगीजी महाराज के वे चिरंजीव मानसपुत्र बने, परम भागवत संत बने।

प.पू. काकाजी के इस साक्षात्कार की -अनुभूतिज्ञान की विशिष्टता यह है कि निर्विकल्प समाधि वाले को और आत्मदर्शन वाले की भी जो कसर न टले वह-अपूर्णभाव और कल्पना प.पू. बापा ने यह ज्ञानसमाधि करवा कर टाल दी। उन्हें अमृत सभर बना दिया। महत्वाकांक्षाओं के उनके ख्वाब सम्पूर्ण बंद हो गए और सच्चे ज्ञानी को जैसे व्यवहार की, संसार की, जगत की, प्रवृत्ति की निवृत्ति हो जाती है वैसे उनके जीवन का पूर्णतया रूपांतर हो गया। काल, कर्म, माया, प्रकृति व स्वभाव से परे के ऐसे दिव्य जीवन की परम मंगलकारी-निश्चिंतता युक्त-स्वरूपादात्म्य वाली और आध्यात्मिक विनम्रता वाली भूमिका कि जहां-दृष्टा, दृष्य और दर्शन-साध्य, साधन और साधना एक होकर अविरोधवृत्ति और अभेददृष्टि में परिणीत होते हैं ऐसी अवस्था उन्होंने प्राप्त करी। आत्मा में परमात्मा के अखंड संबंध की-सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्रय की यह भूमिका है। प.पू. योगीजी महाराज ने भी इस बारे उनकी डायरी में तीन प्रसंग लिखकर नोट किए हैं और कई बार उनके प्रवचनों में भी हमने सुना है। प.पू. काकाजी के खुद के जीवन से भी सभी यह अनुभव कर सकते हैं। असली संत का सर्वोपरि लक्षण है-'सरलता'। प.पू. काकाजी में यह सहज ही दिखाई पड़े, ऐसे वे खूब सरल हैं। कभी भी उन्होंने स्वतंत्ररूप से कोई बात को जिद्द से पकड़ी रखी नहीं। पानी के प्रवाह की तरह यूं वे सभी में रसबस हो जाते। हम सरल वर्तते होंगे-पर मन मार कर या तो बड़े पुरुष कहते हैं इसलिए! ऐसी सरलता की यह बात नहीं है और शायद हम कभी कहीं सरल वर्त भी गये होंगे, तो किसी जगह दो शब्द तो कह ही देंगे। जबकि पू. काकाजी में देखेंगे तो ऐसे प्रसंग का वे हमें कोई ख्याल तक नहीं पड़ने देंगे। दूसरा, उपेक्षा और अपेक्षा रहित के वे पुरुष हैं। उन्होंने कभी भी किसी से तनिक भी अपेक्षा रखी नहीं या जरा भी कभी किसी की उपेक्षा करी नहीं। सत्संग में कल का ही आया हो और भले कैसे भी स्वभाव-प्रकृति का हो फिर भी खुद उसमें रसबस हो जाएं और उसे रसबस कर लें...यूं समग्र गुणातीत समाज में रसबस होकर नए व पुरानों के लिए सर्वस्व की कुर्बानी देकर उन्होंने जो परिवर्तन प्रकटाया है, उसके लिए सारा सत्संग समाज प.पू. काकाजी का हमेशा का ऋणी ही रहेगा और तब भी उसका भी उनके चैतन्य में उन्हें जरा भी अहसास नहीं। उन्होंने बस एक ही देखा है-'प्रभु के अल्प संबंध वाले तो हो ना आप? आपने जो कुछ भी किया सब ही दिव्य!' पू. काकाजी के जीवन में हमने देखा है कि अक्षरपुरुषोत्तम संस्था के कई व्यक्ति उनके ऋण के नीचे व्यक्तिगत रूप से आ गए हैं.....और यह भी शायद एक ओर रख दें, लेकिन जिन्हें पाल-पोस कर खड़े किये हों, जिनमें वे रसबस हो गए हों, जिनके लिए बुरे दिखाई पड़े हों, जिसके उत्थान के लिए बहुत परिश्रम किया हो और ऐसे निजी सेवक भी जब उनकी उपेक्षा करने लगे तब भी उसके प्रति जरा सा भी उन्हें भावफेर ना पड़े या उनके हृदय में उसका जरा भी चुभे नहीं या अवरोधावस्था की कहो या परेशानी की कहो-ऐसी लेशमात्र उपेक्षा वृत्ति प्रगट न हो-वह उनकी ताकत-वह खानदानी कोई अलग चीज़ है। वह साधुता अलग पड़ गई! वह भूमिका अलग है... कभी किसी के स्वभाव या प्रकृति की ओर उन्होंने देखा ही नहीं-देखते ही नहीं। प्रभु का केवल संबंध ही देखकर दया के धोध में उन्होंने सभी को भिगो दिया है और इसी कारण तो अतिसमर्थ होने के बावजूद भी साधारण इन्सान की तरह कसनी सह कर दिव्य करुणा और प्रेम प्रदर्शित करते हुए हमने उन्हें देखा है!.....सूर्य की भांति हर एक के लिए दया और करुणा का वह स्रोत उन्होंने बहाया है। यह है उनका भक्तों के साथ का सुहृद्भाव। यूं वे हमेशा सुहृद्यी ही बने हैं-याहोम हो गए हैं। गल्ती हो और कोई अपमान या उपेक्षा करे तब तो हमें चुभेगा नहीं-लेकिन ज़रा भी कसूर न हो, सेवा ही करी हो और फिर भी आक्षेप थोपे जायें या उपेक्षा हो तब.....? पर, इस विभूति पुरुष की अखूट धीरज कभी गई

नहीं या उनकी निष्ठा की मस्ती कम हुई नहीं देखी...और यही उन्होंने स्वरूप के साथ सच में सुहृद्भाव रखा है। उनके जीवन में भयंकर कठिनाईयां-बाहर की और सत्संग की आई, लेकिन उनका दिल डाँवाडोल नहीं हुआ। उनकी **निश्चिंतता गई नहीं।** यूं. प.पू. बापा का उन्होंने ऐसा सेवन किया है तो निश्चिंतता से-निर्लेपता से वे अखंड आनंद में वर्तते हैं और जहां जाते हैं वहां आनंद प्रगटाते हैं। अखंड वर्तमान में ही महाकाल से पर की भूमिका में स्वतंत्र वह निर्दोष रहकर प्रभुमय-प्रभुप्रेरित भगवान का ही कार्य करते रहकर जगत में और जीवन में रहते हुए दिव्य जीवन की खुशबू फैलाते प.पू. काकाजी शूरवीरता निर्भयता, निश्चिंतता, विनम्रता, सरलता, समता, सुहृद्भाव, साधुता, निरपेक्षता जैसे कल्याणकारी गुणों के साथ-साथ हम सभी के दास होकर वर्तते हैं...भगवान के भक्तों के लिए प्रवृत्ति-वही उनके जीवन का प्रवाह है...भक्तों को उन्होंने प्राण माना है.....उनके सम्पर्क में आए कितने साधक उनके प्रसंग से मन रहित होकर आज निर्विकल्प समाधि का सुख, शांति और आनंद प्राप्त कर रहे हैं-यही उनके साक्षात्कार की स्थिति की प्रतीति है।

- जहां अहंकार विसर्जित हो गया हो,
- जिसके सम्पर्क में नैमिषारण्य क्षेत्र का अनुभव होता हो, (यानि-इन्द्रियों-अंतःकरण के विचार थम जाएं)
- जिसके प्रसंग और समागम से जीवन ऊर्ध्वगामी हो और दिव्य गुणों का विकास होता दिखाई दे,
- जिसकी दृष्टि से जीव जाग्रत होकर ब्रह्मरूप बन कर परब्रह्म में जुड़ जाए-

ऐसी नैसर्गिक ब्राह्मीस्थिति वही आध्यात्मयोगी का परम साक्षात्कार है और वहां समझना कि प्रभु की-असली नारायण की दिव्य शक्ति काम कर रही है। सच्ची गुणातीत अवस्था का यह लक्षण है...और इसीलिए ऐसे स्वरूपानुभूति वाले-सम्यक् दर्शन वाले दिव्यविभूति पुरुषों और आध्यात्म पुरुषों ने स्पष्ट बताई हैं....'52 की वह महामंगलकारी ३ फरवरी को गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को आत्मा-परमात्मा, ब्रह्म-परब्रह्म के दिव्य स्वरूप की अपरोक्षानुभूति कहो-ब्रह्मनिर्वाण की प्रतीति कहो या ज्ञानसमाधि कहो-यह जो करवाई वह एक क्रांतिकारी घटना बनी....एक नूतन युग का प्रारंभ हुआ। नए-पुराने या आज के आने वालों के लिए वह इतना ही खुल्ला है...क्योंकि' **52 की वह समाधि के फलस्वरूप प.पू. काकाजी ने अक्षरधाम की वह दिव्य चेतना के समीप एक संकल्प रखा कि-'मैं अकेला नहीं, बल्कि मेरा भाई, मेरी बा, मेरी बहन, मेरा समाज-मेरे से जुड़े सभी ऐसी दिव्य अनुभूति को पाएं.....'** और इस प्रकार उस 3 फरवरी से नूतन मुक्ति युग के मंडप बंधे। यूं....इस पुरुष के इस संकल्प से बहनों, संतों, युवकों और गृहस्थों का चार पांखुड़ी वाला एक कमल खिल उठा....एक ब्रह्मनियंत्रित समाज की स्थापना हो गई....तो, **आज हम यह भूलें नहीं कि इस पुरुष का वह संकल्प जो हमारे पीछे हैं यही हमारा अहोभाग्य है!!!**

सो, इस स्वरूपानुभूति दिन को हमारे लिए परम मंगलकारी मान कर उनका समागम और प्रसंग करके, उनकी कृपा के पात्र बनें-हमारे जीवन को धन्य बनायें। प्रभु मिलन के उस साक्षात्कार की अभीप्सा रखकर लग पड़ें....खुल्ले दिल से प्रामाणिकता से तीव्र पुकार अंतर से करें और अक्षरधामरूप बन कर महाराज की दिव्यमूर्ति का सुख, शांति और आनंद करें यही गुरुचरणों में प्रार्थना.....

✡✡✡✡✡

भगवत्स्वरूप प.पू. काकाजी का दिव्य संदेश (दि.3.2.78)

भगवान और संत को व धाम, धामी, मुक्तों को देखने की, सुनने की और उनके गुण गाने की जो वृत्ति है, वह आध्यात्म्योग तो है ही, लेकिन वहां हमारा मन भी है। सबसे पहले सम्पूर्ण अमन होने के बाद चैतन्य मन बनना चाहिए। समन स्वरूपमय मन-प्रकाशित मन है। सो उसे हर एक प्रसंग में स्पष्ट दर्शन है और वह दर्शन मानसिक एकता का नहीं, बल्कि वह स्वरूप दर्शन-जहां कि अर्जुन विराट स्वरूप देखने के बाद बिल्कुल अमन हो गए, उसके बाद का वह मन है। उसके बाद सभी विभूतियों के प्रसंगों का स्मरण करके एक विशिष्ट अनन्यभाव-वह अंतर की पहचान वाला सच्चा स्वरूप दर्शन है। यह है जड़-चैतन्य का आध्यात्मिक विवेक और उसके बाद ही हमारी मूल वासना का, मूल प्रकृति का रूपांतर शुरू होता है। जनक-अंबरिष और पर्वतभाई जैसे अनंत हों, अखंड चिंतन करते हों और चित्त का निरोध

कर सकते हों तब भी वह दिव्य दर्शन नहीं है। वह तो अत्यधिक बड़े पुरुष के प्रति सबसे पहले अनन्यभाव रखने पर-कृपा और फिर उसे सम्पूर्ण दिव्य मानने से ही शुरु होता है। 'जन्म कर्म च मे दिव्यम्' भगवान श्री कृष्ण का यह संदेश आखिरी है और उस स्वरूप की पहचान-म. 17, प्र. 62, म. 13 और म. 14 के मुताबिक की तत्त्वनिष्ठा है। यही सच्चा संबंध है। स्वरूप के साथ के सच्चे संबंध में उसे सहज ही दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है। यूं अपने आप सहज रूप से दिव्य सत्कर्म उनकी मर्जी के मुताबिक ही होता रहता है। फिर वहां प्रयत्न करना नहीं पड़ता। इसका नाम ही सच्चा प्रेम, भावना और सत्कर्म।

गीता के गुणातीत की अपेक्षा ऐसा भगवदी-स्वभाव वाला भले ही हो परन्तु वह रजोगुण, तमोगुण व सत्वगुण के शिकंजे में नहीं आयेगा। वह तुरन्त ही वापिस मुड़ जायेगा। क्योंकि उसने प्रभु का ही सर्वोपरि कर्तापन-नियंतापन माना है। यूं व्यापक में श्याम को देखने की उसे दृष्टि मिली है। लेकिन यहां मायिक दृष्टि बिल्कुल उड़ जाती है। बड़े पुरुष के प्रसंग से, सेवा से वह तत्काल मिलती है। प्रकाश यानि-अंधकार का अभाव। स्वरूप मिला ही है तो स्वरूपी महाराज अखंड कार्य करते भी माने जाते हैं। लेकिन वह दिव्य सभानता अखंड नहीं रहती। सो, महिमा का साक्षात्कार-समग्र सत्संग को दिव्यभाव से देखने की दृष्टि अत्यधिक बड़े पुरुष की प्रसन्नता से सभी को प्राप्त हो ऐसी दिव्य दृष्टि सहज ही बने यही सच्ची आत्मप्रतीति है। यही सच्चा स्वरूप दर्शन है। ऐसा सुहृद्भाव गुरुकृपा से सभी को सुलभ बने, सभी एक दूसरे में रसबस हो जाएं, बापा ही सभी में निवास करके सब कुछ कर रहे हैं ऐसी सभानता अखंड रहे-यही 'दिव्य दृष्टि' है। ३ फरवरी के साक्षात्कार की यह अंतिम अनुभूति प्रसन्नता से प्राप्त होती है। तो दिल की सच्चाई से व मन की प्रमाणिकता से-

''थईने साव निराधार, जईने मनने पेले पार,
करीए तुझने पुकार, तो तू सांभळे तत्काळ,
भूलकां मात्र बनी रहीये, गमतु तारुं कर्या करीये,
हैये तारा वसी जईए रे.....
दान दर्शनना आज सहेजे रे मळया.....''

अर्थात्-बिल्कुल निराधार होकर, मन के उस पार जाकर, तुझे पुकार करें तो तू तत्काल सुनता है। बच्चे जैसे बन कर रहें, तेरा पसंदीदा किया करें, दिल में तेरे बस जाएं....दान दर्शन का आज सहज में मिला.....

यह प्रार्थना करें। जिसे सच में साधना करनी है उसके लिए साधन-मध्य.7 और मध्य. 63 तत्काल काम करते हो जाते हैं।

3 फरवरी की ऐसी अनुभूति-एक निश्चयात्मक अवस्था (स्टेट ऑफ माईन्ड) सभी के लिए सुलभ बने और ऐसी निरपेक्ष प्रेमभरी-निर्मल व निर्विकल्प दृष्टि-स्वरूपानुभूति वाली दृष्टि पू. बापा और बड़े पुरुष कर दें यही इस मंगलकारी दिन प्रार्थना और अभ्यर्थना.....

-इक्कीस साल पहले
-(श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका के सौजन्य से)

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

अनिर्देश का गतिविधियाँ

* पंजाब के हरिभक्तों की काफी समय से भावना थी कि प.पू. गुरुजी पंजाब आने का प्रोग्राम बनायें। पर, बाईपास सर्जरी के बाद प.पू. गुरुजी की तबियत देखकर सबने केवल भीतर में प्रार्थना ही चालू रखी थी। भगवान तो सदा से भक्तों के वश हैं, सो प.पू. गुरुजी ने तबियत कुछ अधिक ठीक न होते हुए भी केवल भक्तों को खुश करने पंजाब जाने का प्रोग्राम बनाया। 25.11'98 की शताब्दी से प.पू. गुरुजी लुधियाना पधारे। लुधियाना, सबद्दी, जगरांव के हरिभक्त स्टेशन पर पहले ही पहुँच गये थे। हरिभक्तों की खुशी जैसे समा नहीं रही थी। जगरांव के प.भ. अशोकजी तो एकदम बोल उठे कि-गुरुजी के आने का समाचार आया तो हमारी तो जैसे लॉटरी निकल आई। लुधियाना के हरिभक्तों को दर्शन, सेवा, सत्संग का लाभ देकर सबद्दी होते हुए प. पू. गुरुजी जगरांव पहुँचे। जगरांव में प.भ. गोगीजी के यहां दो दिन रुकने दौरान 27 नवम्बर की शाम को वहीं और 28 नम्बर की शाम को प.भ. मुंशीराम जी के यहां सत्संग की सभा करी। यूं सभी ने एक ही जगह इकट्ठे होकर प.पू. गुरुजी के दर्शन, सेवा व सत्संग का लाभ लेकर आनंद किया।

प.पू. गुरुजी अबकी बार पंजाब के हरिभक्तों की

समझदारी देखखर बहुत ही राजी हुए। प.पू. गुरुजी की तबियत देखते हुए किसी ने भी आग्रह नहीं रखा कि प.पू. गुरुजी हमारे घर पधरामनी करें....बस प.पू. गुरुजी पंजाब आए हैं, तो हमारे ही घर आए हैं। ऐसा सभी ने दिल से माना। प.पू. गुरुजी को तो विचार आ गया कि ओहो! काश! अगर यही समझदारी हमने प.पू. काकाजी के समय पर भी रखी होती तो शायद प.पू. काकाजी हमारे साथ ज्यादा समय तक धरती पर रहते।

29 नवम्बर की शाम को वापिस लुधियाना आए और प.भ. गुप्ताजी के यहां सत्संग सभा करी। रात को वहीं रुककर 30 नवम्बर की सुबह डीलक्स से निकल कर वापिस दिल्ली पहुँचे। पंजाब के **हरिभक्तों की** भक्ति-सेवा-भावना को **बहुत-बहुत धन्यवाद!**

* दिसम्बर '98 में प.पू. गुरुजी की बाई पास सर्जरी हुई, तब से निजी हरिभक्त कहीं भी बाहर नहीं निकले थे। सभी के मन प.पू. गुरुजी की बीमारी में ही केन्द्रित रहते। कईयों के मन में तो ऐसा भी हो गया था कि अब पहले जैसा आनंद-प.पू. गुरुजी के साथ घूमने-करने का मौका शायद नहीं मिल पायेगा।

सभी को उदासी के इस घेरे में से निकालने प.पू. गुरुजी ने पानीपत में प.भ. पुनीत भईया के यहां शिविर का प्रोग्राम बनाया। 26 व 27 दिसम्बर तारीख निश्चित हुई। 26 दिसम्बर की सुबह करीब डेढ़ सौ हरिभक्तों को 'आनंद' व 'उमंग' नाम की दो बस व चार गाडियाँ लेकर निकले। रास्ते में बख्तावरपुर प.भ.बुधरामजी के यहां नाश्ते के लिए रुके। प.भ. बुधरामजी का आनंद देखते ही बनता था। सभी को गरम-गरम नाश्ता खिला कर प.भ.बुधरामजी ने सभी हरिभक्तों के दिल तो जीते ही, साथ ही प.पू. गुरुजी बहुत खुश हो गये....

बख्तावरपुर से निकल कर एक फार्म हाऊस पर रुके। वहां स्वामी की बातें पढ़वा कर सत्संग सभा करी। फिर रास्ते में मुरथल 'गुलशन ढाबे' पर रुके। 'गुलशन ढाबे' के मालिक को प.पू. गुरुजी के प्रति अच्छा भाव है, सो पानीपत जाते हुए हमेशा प.पू. गुरुजी वहां रुकते ही हैं। वहां पर एक सरदारजी को प.पू. गुरुजी का परिचय हुआ और फिर उन्हीं सरदारजी की गाड़ी में पानीपत तक गये। इससे स्पष्ट दर्शन होता है कि मुमुक्षुओं को संबंध देने ही ऐसे भगवान रखे संतों की हर क्रिया होती है।

पानीपत में प.भ. पुनीतजी, नवनीतजी व दीपजी ने बहुत भक्तिभरे भाव से सारी व्यवस्था कर रखी थी। करीब साढ़े तीन बजे प.पू. गुरुजी पहुँचे। तब तक प.भ. पुनीतजी ने पानी तक नहीं पिया था। पूरा घर जैसे प.पू. गुरुजी को सौंप दिया था। सो ही हर एक हरिभक्त को उनका भक्तिभाव भीतर तक स्पर्श कर गया.....सभी को उस घर में अपनापन महसूस हुआ। महाराज के समय की दादाखाचर, पर्वतभाई आदि भक्तों की बातें अब तक सुनी थी। पर आज वो बदलते रूप में साकार सामने देखने को मिल रही थी। प.पू. गुरुजी कई बार कहते हैं कि धरती पर अक्षरधाम से आया भक्तों का यह टोला दुनिया से अलग ही है-उसका सम्यक् दर्शन हो रहा था। प.भ. पुनीत भईया व सारे परिवार को तो ऐसा हो रहा था कि बस प.पू. गुरुजी व हरिभक्तों के लिए व क्या-क्या कर दें....

वहां भोजन करने के पश्चात् 'पानीपत की जंग' का मैदान 'काला आम' स्थान देखने गये। वापिस आकर जलपान आदि लेकर शाम को सत्संग सभा में सभी लाभ लेने बैठे। प.पू. गुरुजी ने प्रगट की परावाणी में से गुरुहरि योगीजी का समझाया हुआ वच. कारियाणी-11 बहुत ही विस्तार से समझाया कि सच्ची प्रीति किसे कही जाये....करीब दो घंटे तक प.पू. गुरुजी लगातार बोले.....ऐसा लगता है कि हम इन पुरुषों के इतने अधिक परिश्रम को अपने मन-बुद्धि, चित्त-अहम् की भूमिका को छोड़कर कब सार्थक करेंगे? रात को सभी ने प्रसाद लेकर आनंद किया।

अगले दिन सुबह सब नहा-धोकर तैयार हो गये। दिल्ली से निकलते ही प.पू. गुरूजी ने कहा था कि खूब कड़ाके की ठण्ड पड़ेगी। लेकिन महाराज तो भक्तों के वश हैं सो, उन्होंने भक्तों के घूमने-आनंद करने के लिए ही मौसम बहुत ही अच्छा रखा।

प.पू. काकाजी के प्रसादी स्थलों का दर्शन कराने प.पू. गुरुजी ने कुरुक्षेत्र का विशेष प्रोग्राम बनाया था। सभी ने कुरुक्षेत्र में ब्रह्मसरोवर, आयुर्वेदिक फार्मेसी, बिड़ला मंदिर, श्रीकृष्ण म्यूजियम व ज्योतिसर-जहां भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। इन प्रसादी के स्थलों का दर्शन किया... ज्योतिसर में ही सब ने दोपहर को प्रसाद लिया...करीब चार बजे कुरुक्षेत्र से वापिस दिल्ली आने निकले! सभी के मन पर प.पू. गुरुजी का अनहद् परिश्रम व अनेक स्मृतिया ही छाई थीं। रात को करीब नौ बजे मंदिर से प्रसाद लेकर सब विदा हुए। यूं आनंद-उमंग शिविर की पूर्णाहुति हुई।

स्वामी की बातें

619. जिसे यह सत्संग मिला उसका पुण्य तो अपार है और इस समागम का फल तो आगे को अविनाशी मिलेगा। अज्ञान केकारण ही यूं होता है कि-खट्रस में रहे और जलेबी में गये। लेकिन जैसी आज्ञा करें वैसे रहना... सो, आज्ञा से करेंगे तो जीव में सुख होगा।

प्र-6.61

620. शास्त्र में मुख्य अहिंसा और ब्रह्मचर्य ये दो धर्म कहे हैं। वो अहिंसा क्या? तो कुछ पदार्थ चाहिए हो और गृहस्थ से माँगे व वह देने में असमर्थ हो तो हिंसा हुई। सो, कोई पदार्थ चाहिए ही नहीं तब अहिंसा पाली जाये। किसी को कष्ट न दें तो वह अहिंसा और ब्रह्मचर्य तो नेत्र, कान, नाक, हाथ, पाँव आदि अंग संभाले तब पले। हाथ-पाँव आदि इंद्रियों युक्त ऐसी देह कहां से मिले? यह तो भगवान भजने का साज है। वह यूं ही खो नहीं देना। इसे सार्थक करे वह सयाना कहा जाये, वर्ना तो पशु जैसा जानना और देह तो अभी छूट गई यूं जानो और जैसे यह घड़ी का घंटा बजता है, वैसे काल आयु को खा जाता है। लेकिन यह जीव वह भूल गया है कि-गर्भवास में वह भगवान को क्या कह कर आया था? यह कीर्तन बुलवा कर बोले कि-क्या डण्डा लेकर मारें? और जीव तो समझता है कि यह सब किसी और के सिर पर है, लेकिन यह नहीं जानता कि मेरे ही सिर पर है। गर्भवास जन्म-मरण चौरासी योनियों के फेरे-ये तो खड़े ही है। सो, ऐसा समागम करके उन्हें टाल देना, तभी निर्भय हो पायेंगे।

प्र-6,63

✡✡✡✡✡

श्रद्धांजलि.....

दिल्ली गुणातीत समाज के आत्मीय स्वजन व हमारे 'पुराने जोगी' प्रेमी मुक्तराज पू. हसमुखराय जानी साहेब सीवीयर 'हार्ट अटैक' के कारण 20 जनवरी '99 की सुबह 2.00 बजे अचानक अक्षरधाम सिधारे और हम सब के बीच से स्थूल रूप से विदाई ले ली। भगवान स्वामिनारायण की अनन्य निष्ठा वाले परिवार में पू. जानी साहेब ने जन्म लिया। प्रगट की सर्वोपरिता की निष्ठा-उच्च संस्कार परिवार से वारसे में मिले ही थे, सो-उनका समग्र जीवन पूर्णतया धार्मिक, सात्त्विक रहा। मुक्तों व संतों के प्रति आत्मीयता रख कर वे जिये और तन, मन, धन से अत्यधिक पूज्यभाव रख कर संतों की सेवा करी। जगत में भी अत्यंत व्यवहार कुशलता रख कर बरते और...संबंध में जो-जो आयें उन्हें स्वामिनारायण की-सर्वोपरिता की निष्ठा कराई। यूं व्यवहार व मोक्ष दोनों सुधार कर अपना जन्म धन्य किया और कईयों को इस रास्ते चलने अग्रसर करके महापुण्य के वे भागीदार बने।

दिल्ली गुजराती समाज-बागदीवार में पू. जानी साहेब पहली बार 1974 में प.पू. काकाजी के जोग में आए। प्रगट की निष्ठा वाले तो थे ही, सो पूर्व के इन बलिष्ठ संस्कारों के कारण प.पू. काकाजी से एक अद्भुत संबंध किया। प.पू. काकाजी तो पू. जानी साहब को कहते-'जानी!' तुम महाराज के समय से 200 साल से हमारे साथ हो....' इस बात से यह भी स्पष्ट पता चलता है कि प.पू. काकाजी के रूप में चेतना को देखने वाली कैसी पारदर्शी विभूति हमें मिली!

प.पू. गुरुजी जब शुरुआत में गुजरात से दिल्ली आकर रहे, तब दिल्ली में स्वामिनारायण धर्म से परिचित दो-तीन परिवारों में से 'जानी परिवार' एक था। इन्होंने उस समय की मुश्किल परिस्थितियों में प.पू. गुरुजी को हर प्रकार से सहायरूप होने का उद्यम किया। इस प्रकार प.पू. गुरुजी व सभी गुणातीत स्वरूपों के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करी। उनकी उस समय की सेवा को हम कभी भूला नहीं पायेंगे। यूं. पू. जानी साहेब ने अपना 75 वर्ष का जीवन आदर्शरूप बना कर बिताया और....सबसे अधिक आनंद की बात यह है कि उनका सारा परिवार भी आज भगवान स्वामिनारायण की निष्ठा रखकर पूरे सत्संग समाज के लिए आदर्शरूप बना है।

पू. जानी साहेब का पार्थिव देह पंचभूत में विलीन हो गया...भगवान स्वामिनारायण के आश्रितों के लिए तो मृत्यु भी मंगलकारी....., समग्र गुणातीत समाज की ओर से पू. जानी साहेब के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि और भगवान स्वामिनारायण उन्हें अपने सान्निध्य में अखंड रखकर अपनी दिव्य मूर्ति का सुख प्रदान करें-ऐसी प्रार्थना!

✡✡✡✡✡

निमंत्रण

आईये-
'अनिर्देश' मंदिर में दि. 31.1.99
सुबह 9.30 से 12.30
ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का
47वां साक्षात्कार दिन
सेवा, स्मृति, समागम से मनाकर
उनके प्रति भक्ति अदा करें
और
स्वयं को धन्य करें !

❖

प्रसादः-दोपहर 12.30 बजे

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 28.1.99 गुरुवार	—	एकादशी, व्रत
(2)	दि. 31.1.99 रविवार	—	ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का 47वां साक्षात्कार दिन 'अनिर्देश'-मंदिर में सुबह 9.30-12.3o मनाएंगे।
(3)	दि. 3.2.99 बुधवार	—	ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का 47वां साक्षात्कार दिन, दिल्ली-अनिर्देश मंदिर का पाटोत्सव
(4)	दि. 12.2.99 शुक्रवार	—	एकादशी, व्रत
(5)	दि. 14.2.99 रविवार	—	महाशिवरात्रि, व्रत
(6)	दि. 26.2.99 शुक्रवार	—	एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'Bhagwatkripa' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY—DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5953035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393